National Journal of Multidisciplinary Research and Development
www.multinationaljournal.com
ISSN: 2455-9040
Received: 14-05-2026, Accepted: 16-05-2026, Published: 01-06-2026
Volume 11, Issue 2, 2026, Page No. 78-79

प्रेमचन्द के उपन्यासों में ग्रामीण जीवन का चित्रण

प्रभा टेटे
अतिथि संकाय, अंडमान एवं निकोबार कॉलेज (एनकॉल) श्री विजया पुरम, भारत
DOI: https://doi.org/10.66856/njmrd.2026.11.2.11051

सारांश
Premchand हिन्दी साहित्य के ऐसे महान साहित्यकार हैं जिन्होंने भारतीय समाज के यथार्थ को अपनी रचनाओं में अत्यंत संवेदनशीलता और गहराई के साथ प्रस्तुत किया। उन्हें "उपन्यास सम्राट" कहा जाता है क्योंकि उन्होंने हिन्दी उपन्यास को सामाजिक यथार्थ और जनजीवन से जोड़ा। प्रेमचन्द के साहित्य में भारतीय समाज का हर वर्ग उपस्थित है, किन्तु ग्रामीण जीवन का चित्रण उनकी रचनाओं की सबसे बड़ी विशेषता है। भारत मूलतः गाँवों का देश रहा है और प्रेमचन्द ने गाँवों की गरीबी, किसानों की समस्याएँ, सामाजिक विषमताएँ, स्त्रियों की दशा, धार्मिक आडम्बर तथा शोषण को अपने उपन्यासों में जीवंत रूप में प्रस्तुत किया।
प्रेमचन्द का जन्म एक ग्रामीण परिवेश में हुआ था। उन्होंने किसानों और मजदूरों के जीवन को निकट से देखा था। यही कारण है कि उनके साहित्य में ग्रामीण जीवन का चित्रण अत्यंत यथार्थवादी और मार्मिक बन पड़ा है। उनके उपन्यास केवल कहानी नहीं हैं, बल्कि भारतीय समाज का सामाजिक दस्तावेज हैं। उन्होंने ग्रामीण जीवन के सुख–दुःख, संघर्ष, मानवीय संबंधों और सामाजिक परिवर्तन की चेतना को अपनी लेखनी के माध्यम से अभिव्यक्त किया।
प्रेमचन्द के प्रमुख उपन्यास जैसे गोदान, निर्मला, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कर्मभूमि आदि में ग्रामीण समाज की समस्याओं का व्यापक चित्रण मिलता है। उनके साहित्य में गाँव केवल पृष्ठभूमि नहीं हैं, बल्कि वे भारतीय संस्कृति और जीवन मूल्यों के प्रतीक बनकर उभरते हैं। प्रेमचन्द ने किसानों की आर्थिक दुर्दशा, जमींदारी प्रथा के अत्याचार, महाजनी शोषण और सामाजिक कुरीतियों को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया है।
यह शोध लेख प्रेमचन्द के उपन्यासों में ग्रामीण जीवन के विभिन्न पक्षों का अध्ययन प्रस्तुत करता है। इसमें किसानों की स्थिति, ग्रामीण स्त्रियों की भूमिका, सामाजिक समस्याएँ, आर्थिक शोषण, ग्रामीण संस्कृति तथा प्रेमचन्द के यथार्थवाद का विश्लेषण किया जाएगा।

मूल शब्दः हिन्दी उपन्यास, किसान जीवन, जमींदारी प्रथा,सामाजिक यथार्थ, ग्रामीण संस्कृति, आर्थिक शोषण, स्त्री विमर्श, सामाजिक कुरीतियाँ, यथार्थवाद

प्रेमचन्द का साहित्यिक परिचय

प्रेमचन्द का वास्तविक नाम धनपत राय श्रीवास्तव था। उनका जन्म 31 जुलाई 1880 को वाराणसी के निकट लमही गाँव में हुआ। उनका जीवन आर्थिक कठिनाइयों और संघर्षों से भरा हुआ था। बचपन में ही माता–पिता का निधन हो जाने के कारण उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उन्होंने शिक्षक के रूप में कार्य किया तथा बाद में साहित्य सृजन को अपना प्रमुख कार्य बनाया।
प्रेमचन्द ने प्रारम्भ में उर्दू में लेखन किया और बाद में हिन्दी साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने साहित्य को केवल मनोरंजन का साधन नहीं माना, बल्कि समाज सुधार का माध्यम बनाया। वे मानते थे कि साहित्य का उद्देश्य समाज को जागरूक करना और मानवता का विकास करना है।
उनकी प्रमुख रचनाओं में गोदान, निर्मला, सेवासदन, गबन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कर्मभूमि आदि शामिल हैं। इन उपन्यासों में भारतीय समाज के विविध वर्गों का यथार्थ चित्रण मिलता है।

ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्रण

प्रेमचन्द के उपन्यासों की सबसे बड़ी विशेषता उनका यथार्थवाद है। उन्होंने ग्रामीण जीवन को आदर्शवादी रूप में नहीं, बल्कि उसकी वास्तविक स्थिति में प्रस्तुत किया। उनके गाँवों में गरीबी, भूख, अशिक्षा, अंधविश्वास और शोषण स्पष्ट दिखाई देता है।
गोदान में किसान होरी का जीवन भारतीय किसान की वास्तविक स्थिति को दर्शाता है। होरी मेहनती और ईमानदार किसान है, लेकिन वह सदैव कर्ज और सामाजिक दबावों से घिरा रहता है। उसकी सबसे बड़ी इच्छा गाय प्राप्त करने की होती है, क्योंकि भारतीय ग्रामीण संस्कृति में गाय समृद्धि और सम्मान का प्रतीक मानी जाती है। किन्तु आर्थिक अभाव और सामाजिक परिस्थितियाँ उसकी इस इच्छा को पूर्ण नहीं होने देतीं।
प्रेमचन्द ने ग्रामीण जीवन की समस्याओं को अत्यंत मार्मिकता से चित्रित किया है। उनके पात्र काल्पनिक नहीं लगते, बल्कि वास्तविक जीवन के प्रतिनिधि प्रतीत होते हैं। यही कारण है कि पाठक उनके पात्रों से भावनात्मक रूप से जुड़ जाते हैं।

किसानों की स्थिति और आर्थिक शोषण

प्रेमचन्द के उपन्यासों में किसान वर्ग सबसे अधिक पीड़ित दिखाई देता है। किसान मेहनत करता है, लेकिन उसका श्रम उसे सुख और सम्मान नहीं दे पाता। जमींदार, साहूकार और महाजन किसानों का आर्थिक शोषण करते हैं।
गोदान में होरी का चरित्र भारतीय किसान की दयनीय स्थिति का प्रतीक है। वह ईमानदार और परिश्रमी है, किन्तु सदैव ऋण के बोझ तले दबा रहता है। महाजन और जमींदार उसकी मजबूरी का लाभ उठाते हैं। उसकी स्थिति यह स्पष्ट करती है कि ग्रामीण भारत में किसान कितना असहाय था।
प्रेमाश्रम में किसानों के संघर्ष और विद्रोह का चित्रण किया गया है। प्रेमचन्द ने यह दिखाया कि किसानों का शोषण केवल आर्थिक नहीं, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक भी था। किसानों के पास न शिक्षा थी, न अधिकारों की जानकारी। वे परम्परागत व्यवस्था के कारण अत्याचार सहने के लिए विवश थे।
किसानों की समस्याओं में निम्नलिखित प्रमुख थीं—

1. ऋणग्रस्तता
2. जमींदारी प्रथा
3. प्राकृतिक आपदाएँ
4. अशिक्षा
5. सामाजिक शोषण

प्रेमचन्द ने इन समस्याओं को साहित्य के माध्यम से समाज के सामने प्रस्तुत किया।

ग्रामीण स्त्री का चित्रण

प्रेमचन्द के उपन्यासों में ग्रामीण स्त्रियों का चित्रण अत्यंत प्रभावशाली है। उन्होंने स्त्रियों को केवल सहायक पात्र के रूप में प्रस्तुत नहीं किया, बल्कि उन्हें संघर्षशील, आत्मसम्मानी और संवेदनशील रूप में चित्रित किया।

गोदान की धनिया एक सशक्त ग्रामीण स्त्री है। वह परिवार की समस्याओं का साहसपूर्वक सामना करती है। जहाँ होरी सामाजिक दबावों के कारण कमजोर पड़ जाता है, वहीं धनिया अन्याय का विरोध करती है। वह ग्रामीण स्त्री की संघर्षशीलता का प्रतीक है।

निर्मला में दहेज प्रथा और स्त्री उत्पीड़न की समस्या का चित्रण मिलता है। निर्मला का जीवन सामाजिक कुरीतियों के कारण दुखमय हो जाता है। प्रेमचन्द ने स्त्रियों की पीड़ा को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया।

ग्रामीण समाज में स्त्रियों को शिक्षा और स्वतंत्रता का अभाव था। वे घरेलू कार्यों और सामाजिक बंधनों तक सीमित थीं। फिर भी प्रेमचन्द ने उनके भीतर की शक्ति और चेतना को उजागर किया।

सामाजिक कुरीतियाँ और अंधविश्वास

प्रेमचन्द ने ग्रामीण समाज में व्याप्त अनेक सामाजिक कुरीतियों का चित्रण किया है। जातिवाद, छुआछूत, दहेज प्रथा, बाल विवाह और अंधविश्वास ग्रामीण जीवन को प्रभावित करते थे।

निर्मला में दहेज प्रथा की समस्या को अत्यंत मार्मिक रूप में प्रस्तुत किया गया है। दहेज के कारण निर्मला का विवाह एक वृद्ध पुरुष से कर दिया जाता है, जिससे उसका जीवन दुखों से भर जाता है।

प्रेमचन्द ने जाति व्यवस्था की कठोरता को भी अपने उपन्यासों में चित्रित किया। निम्न वर्ग के लोगों को समाज में सम्मान नहीं मिलता था। वे सामाजिक भेदभाव और अपमान का सामना करते थे।

अंधविश्वास और धार्मिक आडम्बर भी ग्रामीण जीवन का हिस्सा थे। लोग शिक्षा के अभाव में रूढ़ियों और परम्पराओं को ही सत्य मानते थे। प्रेमचन्द ने इन बुराइयों की आलोचना की और समाज सुधार की आवश्यकता पर बल दिया।

जमींदारी प्रथा और शोषण

प्रेमचन्द के साहित्य में जमींदारी प्रथा का अत्यंत कठोर चित्रण मिलता है। जमींदार किसानों से अत्यधिक लगान वसूलते थे और उनका शोषण करते थे।

गोदान और प्रेमाश्रम में जमींदारों और महाजनों के अत्याचारों का विस्तृत वर्णन है। किसान मेहनत करता है, लेकिन उसकी आय का अधिकांश भाग लगान और ऋण चुकाने में चला जाता है।

प्रेमचन्द ने यह स्पष्ट किया कि ग्रामीण गरीबी का प्रमुख कारण शोषणकारी व्यवस्था थी। उन्होंने किसानों की पीड़ा को समाज के सामने लाकर सामाजिक न्याय की आवश्यकता पर बल दिया।

ग्रामीण संस्कृति और लोकजीवन

प्रेमचन्द ने ग्रामीण संस्कृति, लोक परम्पराओं और सामूहिक जीवन का सुंदर चित्रण किया है। उनके उपन्यासों में गाँव की प्राकृतिक सुंदरता, त्योहार, मेले, लोकगीत और पारिवारिक संबंधों का सजीव वर्णन मिलता है।

गाँवों में सामूहिकता की भावना थी। लोग एक–दूसरे के सुख–दुःख में सहभागी होते थे। त्योहारों और मेलों के माध्यम से सामाजिक एकता बनी रहती थी।

प्रेमचन्द ने ग्रामीण संस्कृति की अच्छाइयों के साथ उसकी कमजोरियों को भी चित्रित किया। वे गाँवों की सरलता और मानवीय संवेदनाओं की प्रशंसा करते हैं, किन्तु सामाजिक विषमताओं की आलोचना भी करते हैं।

प्रेमचन्द का यथार्थवाद

प्रेमचन्द यथार्थवादी साहित्यकार थे। उन्होंने साहित्य को समाज का दर्पण माना। उनके उपन्यासों में कल्पना की अपेक्षा वास्तविक जीवन की समस्याएँ अधिक दिखाई देती हैं।

उनका यथार्थवाद केवल समस्याओं का चित्रण नहीं है, बल्कि उसमें मानवीय संवेदनाएँ और सामाजिक परिवर्तन की चेतना भी निहित है। वे समाज में समानता, न्याय और मानवता की स्थापना चाहते थे।

प्रेमचन्द ने ग्रामीण जीवन को केवल दुख और गरीबी तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसमें संघर्ष, आशा और नैतिक मूल्यों को भी महत्व दिया।

प्रेमचन्द के उपन्यासों की प्रासंगिकता

आज भी प्रेमचन्द के उपन्यास अत्यंत प्रासंगिक हैं। ग्रामीण भारत की अनेक समस्याएँ आज भी विद्यमान हैं। किसानों की आत्महत्या, बेरोजगारी, गरीबी और सामाजिक विषमताएँ आधुनिक भारत की बड़ी चुनौतियाँ हैं।

प्रेमचन्द का साहित्य हमें समाज की वास्तविकताओं से परिचित कराता है और सामाजिक संवेदनशीलता विकसित करता है। उनका साहित्य मानवता, समानता और न्याय का संदेश देता है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि प्रेमचन्द के उपन्यासों में ग्रामीण जीवन का चित्रण अत्यंत व्यापक, यथार्थवादी और संवेदनशील है। उन्होंने भारतीय गाँवों की वास्तविक समस्याओं को गहराई से समझा और साहित्य के माध्यम से समाज के सामने प्रस्तुत किया।

किसानों का शोषण, ग्रामीण स्त्रियों की स्थिति, सामाजिक कुरीतियाँ, जमींदारी प्रथा और आर्थिक विषमताएँ उनके साहित्य के प्रमुख विषय हैं। उन्होंने साहित्य को समाज सुधार का माध्यम बनाया और मानवता, समानता तथा न्याय का संदेश दिया।

प्रेमचन्द का साहित्य आज भी प्रासंगिक है क्योंकि उसमें भारतीय समाज की वास्तविक तस्वीर दिखाई देती है। उनके उपन्यास केवल साहित्यिक कृतियाँ नहीं हैं, बल्कि भारतीय ग्रामीण जीवन का जीवंत दस्तावेज हैं।

संदर्भ सूची

1. Godan – Premchand
2. Nirmala – Premchand
3. Premashram – Premchand
4. Rangbhoomi – Premchand
5. डॉ. रामविलास शर्मा – प्रेमचन्द और उनका युग
6. डॉ. नामवर सिंह – हिन्दी साहित्य का इतिहास
7. डॉ. नगेन्द्र – हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन